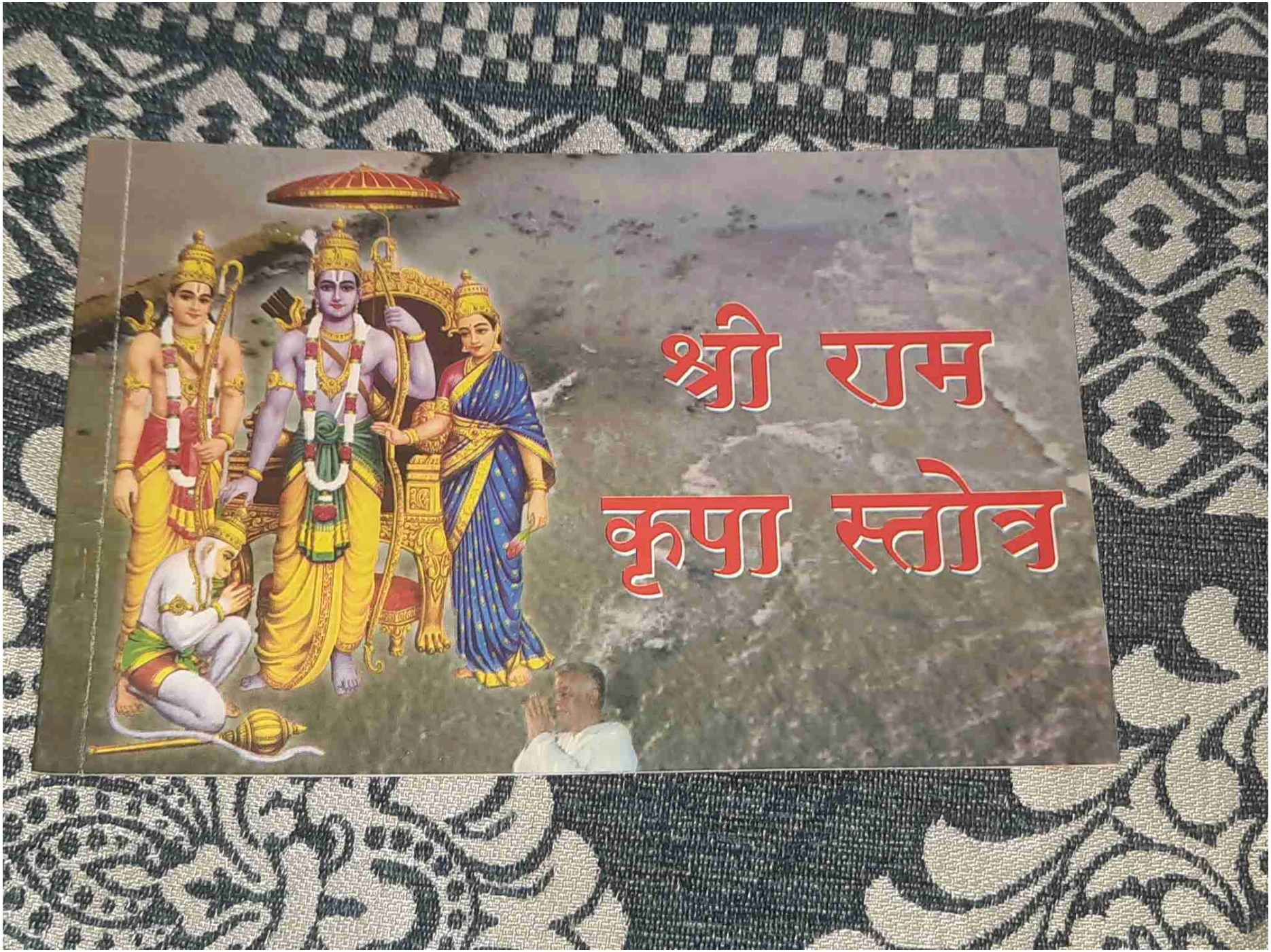
श्री राम
कृपा स्तोत्र

श्री राम कृपा स्तोत्र

वन्दैं प्रभु श्री रामचन्द्र त्रिलोकी के नाथ।।
कमलनयन पीताम्बरधारी धनुष बाण है हाथ।। कैसी सुन्दर छबि प्रभु की सदा प्रसन्न है मुख।। पद्मासन में सदा विराजें सब को देवें सुख।। नीलवर्ण जग पावन देह पर सुन्दर वस्त्र साजें। जनकनन्दिनी सीता जी बायीं

ओर विराजें।। वाह वाह कैसा मनमोहक मंगलकारी ध्यान।। आदि शक्ति सीता के संग शोभित श्री भगवान।।

लीलाधारी राम की लीला अति महान।। सौ कोटि अश्लोक राम की लीला करें बखान।। राम चरित्र जगत् में कल्पतरु सम जान।। जन्म जन्म के पाप हर करें सकल

कल्याण।। सर्वव्यापी नारायण जन्म मरण से रहित।। जग में आए शेषनाग लक्ष्मी जी के सहित।। पारब्रम्ह परमेश्वर रूप धर्यो साकार।। दुष्टों का संहार कर जग का कियो उद्धार।।

दशरथ जी के पुत्र को बार बार नमस्कार।। अपनी परम् दया से रघुवर हर लें

ये अहंकार।। जै जै जै कौशल्यानन्दन जै जै जै श्री राम।। कौशलपति रघुनाथ जी हर लें हमरो काम।। धन्य धन्य श्री राम जी विश्वामित्र के शिष्य।। जगत्पति की दया से जाये क्रोध का विष।। नमो नमो श्री रामचन्द्र लक्ष्मण जी के भ्राता। राम कृपा बिन जीव सदा ही लोभ में जल जाता।। जै राघव जै

रघुनन्दन जै सीता के नाथ।। मोह से हमें छुड़ाइये दे रक्षा का हाथ।। हे प्रभु हे करुणानिधान हमरी सुनो पुकार।। सब रूपों के अन्दर देखें रघुविन्द्र सरकार।।

राम रामचन्द्र रामभद्र जो भी बोले प्राणी।। जन्म जन्म के पाप ता के हर लें

अन्तरयामी।। शंकर बोले सुनो भवानी राम नाम की महिमा।। सहस्र नाम के है बराबर इक राम नाम का कहना।।

"ॐ श्री साईं"

ॐ साईं राम।। जै साईं राम।।